अगस्तका महासप्ताह

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स न० १५

# हरिजनसेवक

दो आना

( संस्थापक : महात्मा गांधी )

भाग १७ सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी अंक २४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १५ अगस्त, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

## सर्मापित जीवन

श्री महादेव देसाअीका जीवन अेक सर्मापित जीवन था। वे शब्दके सच्चे अर्थमें काम करते-करते हीं जीये और काम करते करते ही मरे। अैसे हर व्यक्तिके लिअे, जो किसी खास आदर्शके लिअे अपनेको सर्मापित करता है और अुसके लिअे काम करता है, अुनका जीवन और अुनकी मृत्यु भी स्पर्धाकी चीज थी। नौजवानोंको, जिन्हें अभी अनेकों वर्ष जीना और देशकी सेवा करना है, अुनके जीवनसे प्रेरणा लेनी चाहिये।

नअी दिल्ली, ४-८-'५३ राजेन्द्रप्रसाद
(अंग्रेजीसे)

## प्यारे महादेव

प्यारे महादेवकी पुण्यतिथि १५ अगस्तको पड़ती है। अैसा लगता है मानो कल ही वे हमारे बीचसे गये हों। मैं पहले-पहल ३४ साल पहले अुनसे मिला था और तबसे हम दोनोंने अेक-दूसरेके सुख, दुःख, विनोद और गंभीर तात्त्विक चर्चाओंमें कितना हिस्सा लिया! आज वह सब सपनेकी संपत्त हो गया है। सचमुच 'जीवन अेक चलती-फिरती छाया ही है।'

मद्रास, २८-७-'५३ चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य
(अंग्रेजीसे)

## पुण्य स्मरण

रोजके दौड़धूप और घमालवाले जीवनमें मनुष्य यदि अपने आदर्श और ध्येयका खयाल न रखे, तो अुसका जीवन भी वैसा ही बरबाद हो जाता है, जैसे बिना पतवारकी नाव प्रवाहमें खिंचकर कहीं भी चली जाती है या किसी चट्टानसे टकराकर चकनाचूर हो जाती है। १५ अगस्तका दिन हमारे लिअे दो तरहसे चिर-स्मरणीय बन गया है। अेक तो वह हमारा आजादी-दिन है, अिसलिअे अुस दिन हम अपनी गुलामीकी जंजीरोंको तोड़नेका स्मरण करते हैं; दूसरे, १९४२ की महान क्रान्तिके वर्षमें अुसी दिन महादेव-भाअी अेकाअेक हमारे बीचसे चले गये। महादेवभाअीने अपने गुरु और हम सबके राष्ट्रपिता गांधीजीके जीवनमें २५ वर्ष तक ओतप्रोत रहकर जो तप किया, वह दीर्घकाल तक हमें प्रेरणा देता रहेगा। अपने जीवनकालमें तो वे गांधीजीके सूर्य जैसे तेजस्वी और प्रतापी जीवनमें विलीन हो गये थे। अिसलिअे हम सब अुन्हें पूरी तरह पहिचान नहीं पाये थे।

महादेवभाअीने स्वराज्यकी साधनाके २५ वर्षोंमें जैसा त्याग और तपस्यामय जीवन बिताया, वह स्वराज्य मिलनेके बाद हम सबके लिअे हर तरहसे अनुकरणीय है। खास तौर पर विद्यार्थी, नौजवान और समाज-सेवक अुनके जीवनका गहरा अभ्यास करें और अुसके अनुसार आचरण करें, तो मुझे कोअी शक नहीं कि देशकी नवरचनाका काम बहुत सरल बन जायगा। गुजरातमें अुनके अवसानके बाद अुनके प्रति आदर प्रदर्शित करनेके लिअे स्मारक-कोष अिकट्ठा किया गया था। कुछ सेवकोंको वेतन देनेके अलावा, अुसकी मददसे गूजरात विद्यापीठ (अहमदाबाद) में महादेव समाजसेवा महा-विद्यालय नामकी अेक संस्था चलाअी जाती है। अिस संस्थामें दी जानेवाली शिक्षा ध्येयनिष्ठ समाज-सेवक तैयार करनेकी दृष्टिसे ही दी जाती है। अिस प्रकार समाज-सेवकोंके सामने महादेव-भाअीके जीवनका आदर्श पेश किया जाता है।

महादेवभाअीमें अैसी शक्ति थी कि वे किसी भी क्षेत्रमें काम करके सारी दुनियामें नाम कमा सकते थे। लेकिन अुन्होंने यह सारी शक्ति गांधीजीके चरणोंमें अर्पण करके अेक मूक सेवककी तरह अज्ञात रहकर काम किया। सत्याग्रहकी अनेक लड़ाअियोंकी आंधीमें, गांधीजीके आमरण अुपवासोंके आघातोंमें और लम्बी मुसाफिरियोंमें अिकट्ठे होनेवाले विशाल मानवसमूहोंके बीच भी वे स्वस्थ चित्तसे काम करते रहते थे। अुनके परिचयमें आनेवाले सब लोग अुनकी शान्त और सौम्य मूर्तिको अभी तक भी भूल न सके होंगे। जिन्होंने महादेवभाअीको लम्बे हाथसे अेकसा बारीक सूत कातते देखा होगा, अुन्हें चरखेके संगीतका खयाल आये बिना न रहा होगा। लेखनी पर तो अुनका पूर्ण अधिकार था। 'हरिजन' पत्रोंकी नियमितता और पाठकों पर होनेवाले अुनके अचूक असरके पीछे अुनका कठोर परिश्रम था। गांधीजी भारतके किसी भी कोनेसे 'हरिजन' पत्रोंके लिअे समय पर लेख भेजनेका आग्रह रखते थे, अिसलिअे कभी-कभी महादेवभाअीको रेलमें भी रात-रात भर जाग कर काम करना पड़ता था।

यह मौका महादेवभाअीका गुणगान करनेका नहीं है। जो काम करते-करते अुन्होंने प्राण छोड़े, वह हमारा अपना ही काम है, अिस भावनासे हम अुनके जीवनसे प्रेरणा लें और देशकी अुन्नतिके काममें हाथ बंटायें। अुन्हें श्रद्धांजलि देनेका यही सच्चा रास्ता है।

(गुजरातीसे) मोरारजी देसाअी

## महादेवभाअीका पूर्वचरित

लेखक : नरहरि परीख; अनु० रामनारायण चौधरी

महादेवभाअीके जीवनके २५-२५ वर्षके दो भाग स्वाभाविक रूपमें हो जाते हैं। अेक १८९२ से १९१७ तक और दूसरा १९१७ से १९४२ तक। अुनके जीवनका पूर्वभाग अिस पुस्तकमें दिया गया है जो नवयुवकोंके लिअे विशेष प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

कीमत ०–१४–० डाकखर्च ०–४–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद – ९

www.vinoba.in

## गुनाह और बेकारी

शायद ही कोअी दिन अैसा जाता हो जब अलाहाबाद और लखनअूसे निकलनेवाले अुत्तर प्रदेशके प्रमुख हिन्दी और अंग्रेज़ी दैनिकोंके जिला-समाचार पृष्ठ पर गांवोंमें होनेवाली डकैतियों और अुनके कारण होनेवाली धन तथा जनकी हानिका कोअी न कोअी समाचार न आता हो। कभी-कभी तो जनताकी निगाहमें अिस तरहकी अेकसे ज्यादा और अकसर बहुत संगीन घटनाअें भी आती रहती हैं।

यह स्वाभाविक है कि राज्यकी सरकार अिस परिस्थिति पर बहुत चिन्तित हो। यहां हम २६ मअीके 'स्टेट्समेन' (दिल्ली)से लखनअू, २४ मअीकी दी हुअी अेक खबर अुद्धृत करते हैं:

"अप्रैलके अुत्तरार्धमें अुत्तर प्रदेशमें गुनाहकी परिस्थितिका जो विवरण प्रकाशित हुआ है, अुसमें बताया गया है कि अिस परिस्थितिका मुकाबला करनेके लिअे ग्राम-रक्षा और ग्राम-कल्याण समितियोंका संघटन करनेकी बड़ी आवश्यकता है। अिन समितियोंके साथ रायफल-क्लब भी चलाये जाने चाहिये। पुलिस गांववालोंको अिन कार्योंकी तालीम देनेमें मदद करेगी।

"अैसा अनुभव हुआ है कि शासकीय और कानूनी अुपायोंके साथ-साथ गांवों और मुहल्लोंमें 'अपनी सहायता खुद करना सीखो' की दृढ़ भावना जाग्रत करनेकी जरूरत है। डकैतियों आदिके रूपमें प्रगट होनेवाली अिस गुण्डागिरीके निराकरणका यह अेक बहुत कारगर अुपाय हो सकता है।"

तो अब अिस प्रान्तमें, जहां अेक लाखसे ज्यादा गांव हैं, ग्राम-रक्षा समितियोंका निर्माण होगा, रायफल-क्लब खोले जायंगे, जगह-जगह पहरा-चौकी देनेवाली टुकड़ियां बनेंगी, गोली-बारूद आदिके संग्रहस्थान और अिसी तरहके और भी बहुतसे काम शुरू होंगे। और अगर अैसा हुआ तो यह कल्पना भी कर सकते हैं कि पुलिस और सशस्त्र पुलिस आदिकी संख्यामें भी कअी गुनी वृद्धि की जायगी। लेकिन क्या अैसा करनेसे गांवोंकी ज्यादा अच्छी रक्षा की जा सकेगी? — नहीं।

मेरे विचारमें हमारे ग्राम-जीवनमें अिस नये अुत्पातके सच्चे कारण संक्षेपमें अिस प्रकार हैं:—

१. ग्रामोद्योगोंका लगातार नाश होता जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप गांवके बुनकर, चमार, कुम्हार, बढ़अी, लुहार, कुटाअी-पिसाअी करनेवाले आदि सभी कारीगर बेकार हैं।

२. खेतीके यांत्रिक या 'सुधरे' हुअे कहे जानेवाले औजारों तथा पाताली कुओं (ट्यूब-वेल) आदिके प्रचारसे भूमिहीन या लगभग भूमिहीन खेतिहर मजदूर बेकार हो रहे हैं।

३. पुराने जमींदार बहुत बड़ी संख्यामें काश्तकारोंको बेदखल कर रहे हैं। जिस जमीनको काश्तकार पीढ़ियोंसे जोतता आ रहा था, अुसे और बगीचों तकको जमींदारोंने खुदकाश्त लिखा लिया है।

४. जमींदारीके निर्मूलनसे चिढ़े हुअे कअी जमींदारोंने अपनी जानेवाली जमीन गुण्डोंको सौंप दी है।

५. कअी पुलिस अधिकारी भी डाकुओंको छिपे रूपसे प्रोत्साहन देते हैं, और अुनके लूटके मालमें हिस्सा बटाते हैं।

गुनाहकी अिस बाढ़के और भी कारण हैं जिन्होंने अुसे अप्रत्यक्ष बढ़ावा दिया है; अुदाहरणके लिअे, सिंचाअीमें कुछ नये करोंका लगाया जाना, जिला-बोर्डों द्वारा चुंगी आदिमें बढ़ती और दूसरे नये करोंकी वसूली, गांवसभाके अध्यक्ष या सरपंच अदालतका पक्षपातपूर्ण व्यवहार, कांग्रेसियों और भूतपूर्व कांग्रेसियों या नये प्रजा-समाजवादियोंमें पार्टीबाजी अित्यादि।

ग्राम-रक्षा समितियोंका संघटन अूपर गिनाये सवालोंमें से अेकको भी नहीं छूता। अुलटे, अुससे प्रजाके धनिक वर्गको या अुनको, जिनका माल या पुलिस-महकमेके अधिकारियोंसे मेलजोल है, अधिक बल मिलेगा और नये आतंकका दौर शुरू होगा। गरीब, साधनहीन या चुप रहनेवाले गांववालोंको अुससे कोअी लाभ नहीं होगा। बल्कि जो लाभ आज अुन्हें प्राप्त है, वह भी छिन जायगा, क्योंकि वे तो अदालतोंमें या अधिकारियोंके पास आसानीसे नहीं पहुंच सकते।

हमारे ग्राम-जीवनको जो बीमारी लगातार कमजोर करती जा रही है, अुसकी सच्ची दवा तो अुन्हें विकेन्द्रीकरणके आधार पर क्रमशः अधिकाधिक स्वयंपूर्ण बनानेमें ही है। अुससे गांवोंकी बेकारी दूर हो जायगी, और अंग्रेजों द्वारा जारी की हुअी गांवोंके कच्चे मालको शहरोंमें या मिलोंमें भेजनेकी और शहरोंसे कपड़ा, वनस्पति या तेल, जूते, बरतन आदि वस्तुअें खरीदनेकी प्रथा बंद हो जायगी। साथ ही गांवके शिक्षितोंका शहरोंमें जाना भी रुक जायगा। लेकिन यह तभी हो सकता है जब सरकार अपनी आर्थिक, औद्योगिक, शैक्षणिक तथा दूसरे विषयोंकी नीतियोंमें मूलगामी परिवर्तनके लिअे तैयार हो। सच तो यह है कि अुसे अपनी सारी दृष्टि ही बदलनी पड़ेगी। राष्ट्रीय जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें आज विकेन्द्रीकरणकी तीव्र आवश्यकता है। हम अिस अमिट सत्यको न भूलें कि अुत्तम सरकार वही है जो कम-से-कम शासन करे।

अलाहाबाद, १२-६-'५३ सुरेश रामभाअी
(अंग्रेजीसे)

## सौ फीसदी स्वदेशी

गत वर्ष मेरे अुपवासके अुपरांत 'स्वदेशी' का प्रचार करनेवालोंकी ओरसे यह आग्रह किया गया था कि मैं 'स्वदेशी' की अेक अैसी परिभाषा बना दूं, जिससे अुनके मार्गमें आनेवाली अनेक कठिनाअियां दूर हो जायें। मिलके बने कपड़ेमें स्वदेशीके जो अनेक पहलू हैं, अुन सबका ध्यान मुझे रखना था। कअी परिभाषायें, जो मुझे सुझाअी गअीं, अुन सबको मैंने मिलाया। श्री शिवराव और श्री जालभाअी नौरोजी तथा अन्य सज्जनोंके साथ मैंने लिखी-पढ़ी भी की। लेकिन मैं कोअी अैसी परिभाषा न बना सका, जो सभी प्रसंगों पर काम दे सके। मुझे मालूम हुआ कि व्यापक व्याख्याका बनाना तो असंभव है। बादको मेरे देशव्यापी प्रवासमें मुझे अनेक अनुभव हुअे और संस्थाओंका काम किस तरह चल रहा है, यह देखनेके भी मुझे अनेक अवसर प्राप्त हुअे। अिस सबसे मैं अिस नतीजे पर पहुंचा कि 'स्वदेशी' का काम जिस तरह आज चल रहा है, वह तो अेक प्रकारका धोखा है— पर यह बात नहीं कि जान-बूझकर कोअी आंखोंमें धूल झोंक रहा है। यह भी मैंने देखा कि हमारे बहुतसे कार्यकर्ताओंकी शक्ति अिसमें व्यर्थ ही नष्ट हो रही है और अपने आपको वे खुद ठग भी रहे हैं। मैं यहां जो अैसी सख्त भाषाका प्रयोग कर रहा हूं, अुससे यह न समझ लिया जाय कि स्वदेशीके प्रचारका काम करनेवाले बेअीमान हैं; स्वदेशीके सम्बन्धके केवल मेरे मनोगत विचार ही अिन कड़े शब्दोंमें प्रगट हो रहे हैं। वे बेचारे तो काम करते चले जा रहे थे। अुन्हें यह थोड़े ही मालूम था कि अिस काममें किसी तरहकी कोअी धोखाधड़ी या आत्मप्रवंचना है।

मैं अपने अभिप्रायको और अधिक स्पष्ट करूंगा। जिन चीजोंके प्रचारके लिअे खास सहायता करनेकी जरूरत नहीं, अुन्हीं चीजोंकी प्रदर्शनी हम करते फिरते हैं। अिसका यह परिणाम

www.vinoba.in

होता है कि अुन चीजोंकी या तो कीमत बढ़ जाती है या अेक दूसरेके साथ स्पर्धा करनेवाली अुन्नतिशील पेढ़ियोंमें अवांछनीय रस्साकशी होने लगती है।

कपड़ेकी, शक्करकी और चावलकी मिलोंको हमारी मददकी दरकार नहीं है। किन्तु यदि हम अिन मिलोंको अनमांगी मदद देते रहेंगे, तो चरखा, करघा, खादी, अूख पेरनेका कोल्हू और जीवन-प्रद तथा पोषक तत्त्वोंसे भरा हुआ गुड़ और अिसी तरह ओखली-मूसलका कुटा चावल — गांवकी अिन सब चीजोंका हम नाश कर देंगे। अिसलिअे हमारा यह स्पष्ट कर्तव्य है कि गांवके चरखेको, गांवके कोल्हूको और गांवकी ओखलीको किस रीतिसे जिन्दा रखा जा सकता है, अिसकी हमें बराबर शोध करते रहना चाहिये। चरखे, कोल्हू और ओखलीके ही मालका प्रचार किया जाय। अुनके गुणोंको बतलाया जाय। अुनमें काम करनेवाले लोगोंकी स्थितिकी जांच-पड़ताल की जाय और कल-कारखानोंके बेकार बैठे हुअे कारीगरोंकी गणना करके ग्रामके अिन साधनोंमें — अुनके ग्राम्य रूपमें ही — सुधार करनेके तरीके ढूंढ़कर मिलोंकी प्रतिस्पर्धाका मुकाबला करनेमें अुन बेकार कारीगरोंको मदद पहुंचाअी जाय। गांवके अिन अुद्योग-धंधोंके संबंधमें हमने कितनी भयंकर और अक्षम्य अुपेक्षा दिखाअी है। अिन अुद्योगोंको जिन्दा रखनेके प्रयासमें कपड़े, शक्कर या चावलकी मिलोंके साथ कोअी झगड़ा नहीं है। विदेशी कपड़ा, विदेशी शक्कर या विदेशी चावलकी अपेक्षा तो अपने देशकी मिलोंमें ही बना हुआ कपड़ा, शक्कर या चावल हमें काममें लाना चाहिये। अगर विदेशी स्पर्धाके मुकाबलेमें खड़े रहनेकी अुनमें शक्ति न हो, तो अुन्हें पूरी मदद भी मिलनी चाहिये। पर आज तो अैसी किसी मददकी जरूरत देशी मिलोंके मालको नहीं है। विदेशी मालसे देशी मिलोंका माल बराबर टक्कर ले रहा है। आवश्यकता तो आज ग्रामीण अुद्योगोंको है। हमें बचे-खुचे ग्रामोद्योगोंमें लगे हुअे लोगोंकी रक्षा करनी है, और विदेशी या स्वदेशी मिलोंके आक्रमणसे अुन बेचारोंको बचाना है। संभव है खादी, गुड़ और ओखलीका कुटा चावल मिलके मालसे घटिया हो और अिसीसे वे अुसके मुकाबलेमें न टिक सकते हों। पर असल बात तो यह है कि खादीके अुद्योगके बारेमें जितनी खोज-बीन हुअी है, अुतनी गुड़ और हाथ-कुटे चावलके धंधेमें लगे हुअे हजारों आदमियोंकी स्थितिके संबंधमें नहीं हुअी। अिस काममें तो देशभक्तोंकी अेक भारी सेना खप सकती है। पाठक कहेंगे — 'पर यह तो बड़ा कठिन काम है।' किन्तु यह काम जितने महत्त्वका है, अुतना ही रसमय है। मेरा तो यह दावा है कि यही काम सच्चा, सफल और सौ फी सदी 'स्वदेशी' है।

पर यह तो मेरी भूमिका मात्र है। मैंने तो अूपर सिर्फ तीन ही बड़े-बड़े अुद्योगोंका अुदाहरण देकर बताया है कि स्वदेशीका प्रचार करनेवाले अिन्हीं ग्रामीण अुद्योगोंके अूपर अपना समग्र ध्यान अेकाग्र करें और अिनकी ज्ञानपूर्वक संगठित सहायता करके अिन्हें अब भी मृत्युके मुखसे बचा लें।

अिनके अतिरिक्त अन्य अनेक अैसे ग्रामीण और नागरिक अुद्योग-धंधे हैं, जिन्हें जीवित रखनेके लिअे सार्वजनिक सहायताकी आवश्यकता है; कारण कि अिन अुद्योगोंकी बदौलत हजारों गरीब कारीगरोंको रोटी मिल रही है। अिस संबंधमें जितना भी काम किया जाय थोड़ा है। यह समझ लेना चाहिये कि अिस काममें जितना समय हम देंगे, वह योग्य कारीगरोंको जीवित बनाये रखनेमें खर्च होगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि अगर यह काम अेक सलीकेसे किया जाय, तो अिसे चलानेके लिअे पैसा तो अिसीमें से निकल आयगा; स्वदेशीके अिस खातेको दूसरोंका मुंह न ताकना पड़ेगा। अनेक शिक्षित और अशिक्षित लोगोंकी शक्तिके अुपयोगको अुत्तेजन मिलेगा, बेकार आदमियोंको, बिना दूसरोंके मुंहका कौर छीने, अनायास काम मिल जायगा और हमारे देशकी संपत्तिमें, जो नित्यप्रति अधिकाधिक दरिद्र होता चला जा रहा है, करोड़ोंकी वृद्धि हो जायगी।

अिसमें सन्देह नहीं कि अिस काममें लाभ काफी है, और मन भी अिसमें खूब लगेगा। हमारे यहां आज जितने भी स्वदेशी संघ काम कर रहे हैं, वे सबके सब अिस काममें लगा दिये जायं तो भी पूरा न पड़ेगा। हमारे सामने बहुत ज्यादा काम पड़ा हुआ है। मैंने अूपर जो लिखा है, वह सब और अुससे भी अधिक कांग्रेसकी कार्य-समितिके 'स्वदेशी' संबंधी हालके प्रस्ताव* में आ जाता है। हमारे मुल्कमें कितने ही अुद्योग-धंधे चलानेकी जो शक्ति है और जो यों ही बेकार पड़ी है, अुसका भी अिसमें पूरा-पूरा अुपयोग हो सकता है।

('हरिजनसेवक', १७-८-'३४) **मो० क० गांधी**

---

* कांग्रेस वर्किंग कमेटीने ३० जुलाअी, १९३४ को बनारसमें नीचेका प्रस्ताव पास किया था:

"स्वदेशीके बारेमें कांग्रेसकी जो नीति है, अुसके संबंधमें शंकायें खड़ी हुअी हैं। अिसलिअे यह जरूरी हो गया है कि स्वदेशीके संबंधमें कांग्रेसकी नीति फिरसे स्पष्ट कर दी जाय। सविनय कानूनभंगके दिनोंमें जो कुछ भी किया गया हो, अब कांग्रेसके प्लेटफार्मों पर और कांग्रेसके प्रदर्शनोंमें मिलके बने कपड़े और हाथ-कती हाथ-बुनी खादीके बीच होड़ नहीं करने दी जा सकती। कांग्रेसजनोंसे यह आशा की जाती है कि वे दूसरा हर तरहका कपड़ा छोड़कर केवल हाथ-कती हाथ-बुनी खादीका ही अुपयोग करेंगे और अुसीके अुपयोगको बढ़ावा देंगे।

कपड़ेको छोड़कर दूसरी चीजोंके बारेमें वर्किंग कमेटी सारी कांग्रेसी संस्थाओंके मार्गदर्शनके लिअे नीचेका सूत्र अपनाती है:

'वर्किंग कमेटीकी यह राय है कि स्वदेशीके संबंधमें कांग्रेसी संस्थाओंकी प्रवृत्तियां सिर्फ अैसी अुपयोगी चीजों तक सीमित रहेंगी, जो हिन्दुस्तानमें अुन गृह-अुद्योगों और दूसरे छोटे पैमानेके अुद्योगों द्वारा तैयार की जाती हैं, जिनके समर्थनके लिअे आम लोगोंको शिक्षण देनेकी जरूरत है और जो कीमतें तय करनेमें और अपने मातहत काम करनेवाले मजदूरोंके वेतन और कल्याणके संबंधमें कांग्रेसी संस्थाओंका मार्गदर्शन स्वीकार करेंगे।'

अिस सूत्रका यह अर्थ नहीं किया जाना चाहिये कि देशमें स्वदेशीकी भावनाको बढ़ाने और केवल स्वदेशी चीजोंके व्यक्तिगत अुपयोगको बढ़ावा देनेकी कांग्रेसकी सदाकी प्रतिपादित नीतिमें कोअी परिवर्तन हो गया है। यह सूत्र अिस हकीकतको स्वीकार करता है कि बड़े पैमानेके और संगठित अुद्योगोंको, जिन्हें राज्यकी मदद मिल सकती है या मिलती है, कांग्रेसी संस्थाओंकी सेवाकी जरूरत नहीं है या अुनकी ओरसे कांग्रेसको कोअी प्रयत्न करना जरूरी नहीं है।"

---


## महादेवभाअीकी डायरी

संपा० **नरहरि परीख**

अनु० **रामनारायण चौधरी**

पहला भाग: की० ५-०-० डाकखर्च ०-१४-०

दूसरा भाग: की० ५-०-० डाकखर्च ०-१४-०

तीसरा भाग: की० ६-०-० डाकखर्च १-१-०

**नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद - ९**


www.vinoba.in

# हरिजनसेवक

१५ अगस्त १९५३


## अगस्तका महासप्ताह

नौ से पन्द्रह अगस्त तकका सप्ताह हमारे राष्ट्रके लिअे अेक महासप्ताहके रूपमें चिरस्मरणीय माना जायगा। पूरी अेक पीढ़ीसे भी ज्यादा अरसा हुआ, १ अगस्त, १९२० के दिन भारतीय राष्ट्रीयताके जनक लोकमान्य तिलक महाराज राष्ट्रीय ताकतोंकी बागडोर गांधीजीके अुदात्त हाथोंमें सौंपकर चले गये। महात्मा गांधीने अपनी बुद्धिमत्ता और सत्य-अहिंसाकी शक्तिसे २० सालके अन्दर ही संपूर्ण राष्ट्रकी ताकतोंको संगठित और सुसज्जित कर लिया। अिसके फलस्वरूप ९ अगस्त, १९४२ के दिन हमने अुनके अखण्ड नेतृत्वमें 'भारत छोड़ो' आन्दोलन शुरू किया। अुसके पांच साल बाद, १५ अगस्त, १९४७ को हम आजाद हुअे और आखिरी अंग्रेज शासक हमारे देशको छोड़कर चला गया।

बेशक, यह हमारे राष्ट्रके लिअे अेक अैसी महान सिद्धि थी, जिसका दूसरा अुदाहरण दुनियाके अितिहासमें नहीं मिलता। जैसा कि अुसके आगेके कुछ बरसोंकी घटनाओंने दिखा दिया है, भारतने कुछ अैतिहासिक महत्त्वके काम कर दिखाये हैं, जिनके लिअे गर्व करनेका हमें पूरा अधिकार है और अुससे किसीको हमारे प्रति अीर्ष्या नहीं होगी। १५ अगस्तको जब हम आजादीकी छठी सालगिरहकी खुशियां मनायेंगे, हम अुस जगत्पिताको याद करें जो अेकमात्र महान और श्रेष्ठ है और जिसने हमें अपनी कीर्ति और प्रतिष्ठा प्रदान की है; अुस दिन हम छोटे-बड़े सारे देश-भक्तोंको अपनी श्रद्धांजलियां अर्पण करें, जिन्होंने देशकी आजादीके लिअे जीतोड़ मेहनत की और अुसके लिअे अपने प्राण तक निछावर कर दिये। यह भी सर्वथा अुचित है कि अुस दिन हम अुनमें से अेक देशभक्त, श्री महादेव देसाअी, को खास तौर पर याद करें, क्योंकि वे अुसी दिन अहिंसक युद्धके गौरवशाली मैदानमें वीरगतिको प्राप्त हुअे, जिसने पांच साल बाद अुसकी विजय देखनेका सौभाग्य प्राप्त किया।

स्वर्गीय श्री महादेव देसाअीने हिन्द स्वराजके हमारे अुदात्त ध्येयकी सिद्धिमें और अुसके तेजस्वी नेताकी अनन्य भक्ति और सेवामें अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया। महादेवभाअीके अिस अनुपम आत्म-बलिदानके लिअे और देशकी बेदी पर दिल और दिमागकी अपनी सारी शक्तियों और योग्यताओंको खुशी-खुशी भेंट चढ़ा देनेके लिअे राष्ट्र अुनका सदा ऋणी रहेगा।

अुस दिन हम मरहूम कायदे-आजम जिन्नाके — जिन्होंने हमारी पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं पर अेक नये स्वतंत्र राज्य पाकिस्तानका आरंभ और स्थापना की — नेतृत्वमें हमारे मुस्लिम देशबंधुओंके अेक विशाल जनसमुदायकी महाकूचको भी याद करें। अुसके बाद छः साल बीच चुके, जो दुर्भाग्यसे हम दोनोंके लिअे किसी तरह सुखद नहीं रहे। अब हम सौभाग्यसे पहली बार भारत-पाकिस्तान संबंधोंके नये युगमें प्रवेश कर रहे हैं। कड़वाहट और गलतफहमियोंके काले बादलोंके घने आवरणको चीरकर पड़ोसी देशोंकी अनिवार्य मित्रताकी किरणें क्षितिजमें दिखाअी देने लगी हैं। भगवान करे १५ अगस्तके दिन शुरू होनेवाला नया वर्ष दोनों देशोंके बीच शुभ पड़ोसी-धर्म, सद्भावना और मित्रताका सूर्य अुदय होते देखे, जिससे भारत और पाकिस्तान तथा सारी दुनियाका कल्याण हो।

हमारे घरेलू मोर्चे पर भी हम धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूपमें सही रास्ते पर मुड़ रहे हैं। बड़ी-बड़ी बातोंके हवाअी किले बनानेके बजाय अब हमारा ध्यान कठोर परिस्थितियोंसे मजबूर होकर देशकी सच्ची जरूरतोंकी तरफ जाने लगा है। हमारा राष्ट्र गरीब है; हमारी जनतामें भयंकर बेकारी है। हम अीमानदारीका काम चाहते हैं। हममें से ज्यादातर लोग दूर दूरके गांवोंमें रहते हैं; आधुनिक टेकनालाजी (शिल्प-विज्ञान)के लाभ, भले वह कितनी ही सक्षम और फायदेमन्द क्यों न हो, अिन गांवोंकी जनता तक जल्दी नहीं पहुंच सकते। अिसलिअे हमारी समस्या अैसी अटपटी है, जिसके पूरे अर्थों और जरूरतोंको हमारे राष्ट्रपिताने समझ लिया था। अीश्वरकी कृपा है कि आजकी हमारी सरकारें अिस बुनियादी सवालकी सचाअीको महसूस करने लगी हैं।

१५ अगस्तको हम खादी और भूमिदान जैसे अपने बुनियादी रचना-कार्योंको याद करें, जो हमारी प्रजाकी आन्तरिक अभिलाषाको रचनात्मक और सक्रिय ढंगसे मूर्तरूप प्रदान करते हैं। हम आशा करें कि हमारी सरकार अिस दिशामें आगे बढ़ेगी और हमारी गृह-नीतिको भी वैसी ही मौलिक और दूरदर्शी बनायेगी, जैसी कि सारे विश्वमें शांति और सलामती बढ़ानेकी हमारी विदेश-नीति है। जैसा कि श्री जवाहरलालने सुन्दर ढंगसे कहा है, "हमारा विचार देशके जनसाधारणको यह महसूस करानेका है कि वह अिस सारी नवरचनाकी प्रक्रियामें अेक भागीदार है।... हमें आम लोगोंको यह महसूस कराना है कि वे सब अिस महान राष्ट्रीय साहसके काममें भागीदार हैं। अैसा होगा तभी वे देशकी स्थिरता और संगठनमें दिलचस्पी लेंगे। लेकिन आज बेकार लोग आपकी योजनामें भागीदार नहीं हैं। बेकारी अपने आपमें अेक विघातक चीज है।... हमारे सामने बड़ा काम देशके आम लोगोंको कामके जरिये और बौद्धिक अपीलके जरिये अिस योजनामें सहयोग देनेवाले भागीदार बनानेका है।" ('आर्थिक समीक्षा', १-८-'५३)

हमारी आजादीके सातवें वर्षमें, जिसमें हम आज प्रवेश कर रहे हैं, अुन विदेशी नारों और सूत्रोंको भूलकर जो अक्सर हमारे दिमागमें गड़बड़ी और अस्पष्टता पैदा करते हैं और हमें पाश्चात्य पद्धतिके पुराने रास्ते पर चलनेके प्रलोभनमें आसानीसे फंसा देते हैं, हमें अपनी सारी शक्ति अिस महान कार्यकी सिद्धिमें लगा देनी चाहिये।

८-८-'५३ मगनभाअी देसाअी
(अंग्रेजीसे)

## शहीद महादेवभाअी

९ अगस्तको सदर बाजारके बारहटूटी चौकमें झंडा लहरानेका आदेश मुझे प्रदेश कांग्रेस कमेटीसे मिला था। झंडा वन्दनका समय प्रातः ७ बजे रखा गया था। काफी संख्यामें स्त्री-पुरुष और बच्चे अिकट्ठे हो गये थे। अुनमें कुछ पुलिसके सिपाही भी थे। सबकी आंखें तिरंगेको फहराते देखकर गर्वसे चमक अुठी थीं। सबके चेहरों पर देशप्रेमकी छाप थी।

मेरी आंखोंके सामने ९ अगस्त, १९४२ का नकशा खड़ा हो गया। अुस रोज प्रातःकालसे बम्बअीके हर हिस्सेमें स्त्री-पुरुषोंके झुण्डके झुण्ड अिकट्ठे हो रहे थे। गांधीजीको सुबह छः बजे पकड़ लेनेकी खबर जंगलकी आगकी तरह फैल गयी थी। जनताके हृदयमें आजादीकी लगनकी आग सुलग रही थी। अुस पर गांधीजीकी गिरफ्तारीने तेलका काम किया। ज्वाला भड़क अुठी। पुलिस अुस आगको दबानेके लिअे जगह-जगह लाठी चार्ज कर रही थी, अश्रु-गैस छोड़ रही थी। मगर जनताको दबाना समुद्रकी लहरोंसे टक्कर लेने जैसा था। आजादीकी महान लड़ाअीका आखिरी जंग शुरू हो गया था।

८ अगस्तकी शामको अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने "भारत छोड़ो" प्रस्ताव पास किया था। अुसके बाद गांधीजी करीब दो

www.vinoba.in

ढाअी घंटा अेक सांसमें बोले। अुन्होंने "भारत छोड़ो" प्रस्ताव लोगोंको समझाया। आगे वे कैसे ब्रिटिश सरकारसे बातचीत करनेका सोच रहे थे और सत्याग्रहको बिलकुल आखिरी हथियारके रूपमें अिस्तेमाल करनेका अुनका विचार था, वगैरा सब अुन्होंने समझाया।

रातको करीब १२ बजे बापू सोनेको लेटे, तब कुछ लोगोंने कहा — बापूजी, अफवाह गरम है कि आपको पकड़नेकी सब तैयारी हो चुकी है। बापूने विश्वास नहीं किया और बोले, "अंग्रेज अितने मूर्ख नहीं कि मेरे जैसे अपने सच्चे दोस्तको वे जेलमें डालें।" मगर अिस बातमें अुनका निदान गलत निकला। ९ अगस्तको प्रातः पांच बजे महादेवभाअी हांफते-हांफते भीतर आये और बोले, "बापू, वे आ गये!" बापू गुसलखानेमें थे। खबर पाकर वे जरा भी अुद्विग्न नहीं हुअे। पूछा, "तैयारीके लिअे कितना समय देते हैं?" पुलिस अफसरने आधा घंटा दिया। सबने मिलकर छोटीसी प्रार्थना की। भजन था :

"हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे."

बापू, महादेवभाअी और मीरा बहनके नाम वारन्ट थे। सबने जल्दीसे अपनी आवश्यक चीजें अिकट्ठी कीं, हम सबसे बिदा ली और चल पड़े।

बापूने सत्याग्रह अभी शुरू नहीं किया था। किसीको पता भी न था कि आगे क्या करना होगा। चलते समय अेक ही संदेश अुन्होंने दिया: अहिंसक युद्धमें हमारा अेक-अेक सिपाही जब गिरे, तो अुसकी छाती पर यह मंत्र होना चाहिये — करेंगे या मरेंगे।

पच्चीस सालकी आजादीकी लड़ाअीमें अनेक सिपाही समाप्त हो गये, 'करेंगे या मरेंगे' अिस महामन्त्रका अमल करते हुअे बलिदान हो गये। जगत अुनका नाम तक नहीं जानता। कअी अैसे थे कि अुनका नाम तो प्रख्यात था, मगर अब हम अुन्हें भी भूलने लगे हैं। अैसे मूक शहीदोंमें महादेवभाअी भी थे।

बापूके दक्षिण अफ्रीकासे आनेके थोड़े समय बाद २५ सालकी अुम्रमें महादेवभाअी अुनकी सेवामें आये। और २५ वर्ष सेवा करनेके बाद १५ अगस्त, १९४२ को गिरफ्तारीके छठे रोज वे चल दिये। २५ सालकी सेवामें अुन्होंने बापूजीके कपड़े धोये, बर्तन भी साफ किये और कअी आवश्यक और महत्त्वकी कान्फरेंसोंमें अुन्होंने अपने स्वामीकी नुमाअिन्दगी भी की। अुनको निरंतर अेक यही चिन्ता रहती थी कि यत्किंचित भी बापूजीका बोझ कम किया जा सके तो जरूर किया जाय।

महादेवभाअी स्वभावसे संन्यासी नहीं थे। वे रसिक थे। अुनकी वृत्ति कलाकारकी थी, कविकी थी। मगर अुन सब शक्तियों और वृत्तियोंको अुन्होंने गांधीजीकी सेवामें अर्पण करना तय किया। अुनके अक्षर मोतीके दाने जैसे थे। 'नवजीवन' और 'हरिजन' में अुनके लेखोंकी प्रजा राह देखा करती थी। ये लेख गांधीजीकी जीवनी-जैसे हुआ करते थे। और गांधीजीको जिन कामोंमें दिलचस्पी थी, अुनके बारेमें जानकारी देनेवाले भी होते थे।

आगाखान महलके दरवाजेके बाहर अुन्हें दुबारा नहीं आना था। अुनकी मृत्युका सदमा शायद बापूको और सब मृत्युओंसे ज्यादा लगा। हररोज वे महादेवभाअीकी समाधि पर फूल चढ़ाने जाते थे और वहां गीताजीके १२ वें अध्यायका पाठ करवाते थे। किसीने सवाल किया — "क्या यह मूर्तिपूजा नहीं है?" गांधीजीका अुत्तर था, "नहीं, महादेवके प्रति श्रद्धांजलि अर्पण करके मैं महादेवके भक्तिभावका अनुकरण करना चाहता हूं। शिष्यसे वह मेरा गुरु बन गया है।"

महादेवभाअीने 'करेंगे या मरेंगे' मन्त्रका अक्षरशः आखिरी श्वास तक पालन किया। हमें भी आज अुनका अनुकरण करना है। 'करेंगे या मरेंगे' की भावनाके बगैर हम अपने देशकी समस्याअें हल नहीं कर सकते। अंग्रेजोंके जानेमात्रसे देशकी गरीबी दूर नहीं हो सकती। गरीबी दूर करनेके लिअे और दूसरी त्रुटियोंको पूरा करनेके लिअे हममें से हरअेकको 'करेंगे या मरेंगे' की भावनासे काम करना होगा। शहीदोंके प्रति अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते समय हम अीश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि वह हमें अुनके नकशे-कदम पर चलनेकी शक्ति दे।

१०-८-'५३ **सुशीला नय्यर**

## महादेवभाअी

१५ अगस्त हमारे राष्ट्रका स्वातंत्र्य-दिन है। अुसे आया देख हमारा मन भगवानके प्रति कृतज्ञतासे भर जाता है कि जिस राजनीतिक आजादीके लिअे हम अरसेसे लड़ते आ रहे थे और पिछले तीस साल तो जिसके लिअे हमने दुनियाके अेक अन्यतम महापुरुषके बेजोड़ नेतृत्वमें बहुत वीरता और बहादुरीसे जद्दोजेहद की — वह राजनीतिक आजादी अुसने हमें दी। अपने देशकी अिस आजादीके लिअे भगवानके प्रति कृतज्ञता प्रगट करते हुअे सहज ही हमें अुन नामोंकी याद आती है, जिन्होंने आजादीके लिअे अपनी कुरबानी दी। अैसी अेक पवित्र याद महादेवभाअीकी है। मुझे अुनके साथ कअी साल तक काम करनेका मौका मिला था। अुनकी बुद्धि बहुत बढ़िया थी, और अुनका चरित्र तो और भी बढ़िया था। हीन काम तो करना दूर, कोअी हीन विचार भी अुनके मनमें प्रवेश नहीं पा सकता था। गांधीजीके प्रति अुनकी संपूर्ण भक्ति, गांधीजीके व्यक्तित्व और विचारोंकी अुनकी बुद्धि-युक्त समझ, और अुनका अत्यन्त धार्मिक स्वभाव, जिसने अुन्हें गांधीजीके जीवन-दर्शनकी आधार-भूमिका गहरा ज्ञान प्रदान किया था — अिन सब गुणोंने अुन्हें गांधीजीका अपने समयका अेक श्रेष्ठ व्याख्याकार बनाया था। जब भी 'हरिजन'-पत्रोंका संचालन अुनके हाथमें रहा, अुनमें प्रकाशित महादेवभाअीके लेख बराबर पाठकोंका ध्यान बरबस खींचते रहे और अुन्हें विचारकी प्रेरणा देते रहे। वे जब भी लिखते थे, अुनकी अेकमात्र अिच्छा यही रहती थी कि वे गांधीजीके विचारोंको जनताके और सरकारके सामने भरसक युक्ति-युक्त रूपमें और प्रभावशाली ढंगसे रख दें। दूसरे शब्दोंमें, महादेवभाअी गांधीजीके विचारोंके प्रचारके सिवा कोअी दूसरी बात सोचते ही नहीं थे। तब अिसमें क्या आश्चर्य कि जब कभी महादेवभाअी गांधीजीके साथ न होते, तो अुन्हें अैसा लगने लगता (जैसा कि अुन्होंने खुद कहा भी था) कि मेरा दाहिना हाथ खो गया है। लेकिन गांधीजीके प्रति अुनकी भक्ति और गांधी-विचारके अुनके ज्ञानके सिवा भी अुनमें अैसी अनेक विशेषताअें थीं कि मनुष्य अुन्हें सहज ही प्रेम करने लगता था। अुनका स्वभाव और व्यवहार बहुत स्नेहपूर्ण था, अुनके पास किसीको अपना हृदय खोलकर रख देनेमें कोअी झिझक नहीं होती थी। बड़ी बात तो यह है कि अुन्होंने अहिंसाकी आत्माको पा लिया था, क्योंकि वे विनम्रताकी मूर्ति थे। वे जीवनके किसी भी क्षेत्रमें चमक सकते थे, लेकिन अुन्होंने अपनी सारी योग्यताओंको अपने गुरुके कार्यकी सेवामें ही लगाना पसन्द किया। और यह सेवा अुन्होंने बहुत विनम्रतापूर्वक, अपनेको हमेशा पीछे रखकर, की। मैं सोचती हूं कि यदि वे आज होते — और हो सकते थे, क्योंकि अुनकी मृत्यु बहुत जल्दी हो गयी — तो हमारी सरकारमें वे अवश्य किसी अूंचे पद पर आसीन होते।

जो भी हो, हममें से जो भी लोग अुन्हें जानते थे, वे हमेशा अुनके सत्संगकी याद करेंगे और अुनका नाम भारतकी आजादीके लिअे लड़ने और कुरबानी देनेवालोंकी सूचीमें हमेशा अमर रहेगा, और हमारा आदर पाता रहेगा।

(अंग्रेजीसे) **अमृतकुंवर**

www.vinoba.in

## स्वदेशी धर्म

आजादी मिलनेके बाद हमारे देशमें कुछ बातें, जो अच्छी और लाभदायक थीं, देखते-देखते ही खतम हो गयीं। अुनमें स्वदेशी धर्मका पालन अेक बड़ीसे बड़ी बात मानी जानी चाहिये। अिसमें हमारी सरकार, जनता और व्यापारी वर्ग सब अेकसे दोषी हैं। सरकार यह नहीं देखती कि वह मालके आयात-निर्यातके लिअे जो कदमं अुठाती है और परवाने देती है, अुससे देशका भला होगा या बुरा। वह तो मानो अेक यही बात समझती है कि अैसा करनेसे हमें विदेशी विनिमय कितना मिलता है। और शायद चुंगीकी आमद पर निगाह रखी जाती होगी।

व्यापारीको अपने व्यापारकी ही चिन्ता रहती है। वह मानो अिसीको अपना सच्चा वैश्यधर्म मानता है कि लोग खरीदनेको तैयार हों तो चाहे जहांसे माल लाकर और बेचकर मुनाफा कमाया जाय।

और बेकारीसे मर रही जनता भी पड़ोसके बुनकर, मोची, कुंभार, सुतारका माल नहीं लेती, बल्कि व्यापारी बाहरसे मंगाकर जो लुभावना माल सामने रखते हैं, अुसीको खरीदनेके लिअे ललचाती है। सस्ता होता है अिसलिअे लोग अुस पर वैसे ही टूट पड़ते हैं जैसे दीये पर पतंग। लेकिन क्या सचमुच वह सस्ता होता है? विदेशी माल खरीदनेसे पैसे बाहर जाते हैं; देशमें अुनका अुपयोग नहीं होता। नतीजा यह है कि अितनी खरीद-शक्ति घटनेसे हमारे यहां मंदी रहती है। अिसलिअे सस्ता माल खरीदने जानेमें आखिर वह महंगा ही नहीं पड़ता, बल्कि घातक भी सिद्ध होता है, अिसे कोअी नहीं देखता।

आज बेकारीकी पुकार मचाअी जाती है। अैसे वक्त कोअी अिसके अिलाजके रूपमें व्यापक स्वदेशी धर्मका विचार करके अुसके अनुसार कदम अुठानेकी बात नहीं कहता, यह भी क्या अेक दुःखका ही विषय नहीं है?

यहां कोअी यह पूछ सकता है कि स्वदेशीका अर्थ क्या। यह सवाल आज भी पूछा जाता है, यह अेक आश्चर्यकी बात है। क्योंकि अिसका जवाब तो गांधीजीने बहुत गहराअीसे सोच-विचार कर दे ही दिया है। जिस अुद्योग-धंधेकी चीजें पासके पड़ोसीकी बनाअी हुअी चीजोंको नुकसान पहुंचाकर यानी अुसे बेकार बनाकर बाजारमें बिकें, अुन चीजोंमें सच्चे स्वदेशी धर्मका कहीं न कहीं भंग होता है अैसा मानना चाहिये। स्वदेशी धर्म अिस बातको प्रधानता देता है कि समाजके लिअे अुपयोगी और जरूरी काम देकर सबके लिअे अनुकूल और पूरी रोजीका अिन्तजाम करना चाहिये। और अुसके लिअे खरीद-बिक्रीका जैसा भी प्रबंध जरूरी हो किया जाय। यह काम अगर ठीक ढंगसे चलाना हो, तो अिसके लिअे कोअी अनुकूल अिकाअी तय करना चाहिये। जिस तरह राज-कारोबारकी सुविधाके लिअे जिला और तहसील बनाये जाते हैं, वैसे ही आर्थिक कारोबार चलानेके लिअे भी कोअी अमुक अिकाअी होनी चाहिये। अुसके लिअे अुचित विस्तारका प्राथमिक अिकाअी-विभाग विचारा जाना चाहिये। और यह मानना चाहिये कि अैसे अिकाअी-विभागके लोगोंकी प्राथमिक जरूरतोंकी पूर्तिके लिअे आवश्यक माल तैयार करके मुहैया करनेका काम वहांके लोगोंका कुदरती रोजगार या अुद्योग-धंधा है। यह काम वे अच्छी तरह चला सकें अिसके लिअे अुन्हें ज्ञान-विज्ञानकी जरूरी जानकारी मददके रूपमें मिलती रहनी चाहिये।

अिस तरह अगर भारतमें कोअी आर्थिक अिकाअी तय करनी हो, तो वह गांव ही हो सकता है या होना चाहिये। भारतको अिस ढंगसे संगठित करनेके लिअे जनताको अनुकूल शिक्षण देना चाहिये और अैसे संस्कार अुसमें पैदा किये जाने चाहिये। और सरकारको जैसे भी जरूरी लगें वैसे कानून-कायदे और नियंत्रणों द्वारा काम लेना चाहिये — शर्त यह है कि अुसके मूलमें ग्रामवासियोंका साथ और अुत्साहभरा श्रमका सहकार हो।

अिस प्रकारकी आर्थिक व्यवस्था दुनियामें अेक नअी ही चीज है। लेकिन अिससे वह गलत नहीं ठहरती। यह आजकी दुनियाकी केन्द्रित और केन्द्रित होती जा रही अर्थ-रचनासे बिलकुल अलग है। आजकी रचना मशीन और पूंजी पर खड़ी है; मनुष्य अुसके दलदलमें फंस जाता है। वह लोभ, लालच, स्वार्थपूर्ण सुख-चैन भोगनेकी वृत्तिको अुभाड़ती है और झगड़े, तंगी, खींचतान, दौड़-धूप, असन्तोष और अतृप्तिको जन्म देती है। स्वदेशी धर्मकी अर्थ-व्यवस्था अिससे ठीक अुलटे तरीकेसे काम करना चाहती है। वह मनुष्य और अुसकी सुख-शांतिको मुख्य मानकर, लाभदायी सिद्ध होनेवाले यंत्रों और औजारोंसे काम लेकर तथा आवश्यक पूंजी व्यक्तियोंसे सहज ही अिकट्ठी करके तुरन्त काम शुरू करनेको कहती है। दुनियामें भारतकी यह खास जिम्मेदारी है कि वह अिस नये सिद्धान्तको अमलमें लाकर दिखा दे। क्योंकि अहिंसा और शांतिसे स्वराज्य हासिल करनेवाली प्रजाका पहला-पहला अुदाहरण हमने ही संसारके सामने रखा है। अैसी प्रजाके लिअे सच्चे आर्थिक स्वराज्यकी स्थापनाके पहले करने जैसा अेक काम स्वदेशी धर्मका अर्थतंत्र निर्माण करना है, जो अितिहास और हमारे राष्ट्रपिताने हमें सौंपा है।

८-८-'५३ मगनभाअी देसाअी

(गुजरातीसे)

## खादी और मजदूरीका मान

मानवकी सब समस्याओंकी जड़ आर्थिक समस्या है, अैसा कहना गलत नहीं होगा। दुनियाकी सबसे बड़ी समस्या आर्थिक है। व्यक्ति, परिवार, गांव, देश व दुनिया अिस समस्याके कारण बेचैन हैं।

आर्थिक समस्याके कअी पहलू हैं। अुत्पादन, वितरण, पूंजी आदि। अिन सबको अेक सूत्रमें बांधनेके कअी प्रकार सोचे गये, आजमाये गये और आज यह करीब सर्वमान्य हो चुका है कि समताकी नीति ही अुज्ज्वल नीति है। सब विचारधाराअें समताकी कसौटी पर कसी जाने लगी हैं; शायद समता-युग आ रहा है। अुसका मंथनकाल शुरू हो गया है।

आर्थिक समस्याका हल समता-नीतिसे न कर सके वह खादी कैसी? जिस खादी-कार्यसे अिसे सिद्ध करनेकी दिशामें आगे न बढ़ा जा सके वह खादी-कार्य नहीं है। खादीमें मजदूरीका मान क्या हो, अिसका विचार हमें अुसी गहराअीमें ले जाता है।

'कामका वितरण हो, पर मजदूरी समान हो' यह विचार तेजीसे समाजकी कल्पनाशक्तिको पकड़ रहा है। लेकिन समानताकी व्याख्या क्या? मजदूरीका नाप क्या?

कामोंमें समानता नहीं है। काम करनेवालोंमें समानता नहीं है। साधन भी समान नहीं होते। आर्थिक क्षेत्र अिन सब असमानताओंसे घिरा हुआ है। अिन विचित्रताओंको नापनेके लिअे पैसेका नाप मनुष्यने आजमाया। पर वह नाप भी स्थिर नहीं रह सका। वक्त बेवक्त बदलता ही रहा।

लेकिन समताकी भावना अुसके कारण रुकी नहीं रह सकती। समाजमें समता लानेके तरीके सोचे जा रहे हैं। "सबका अधिकार" यह सूत्र अिसीमें से निकला है। अुससे विषमताका विष (दंश) नहीं रहेगा, यह अेक कोशिश है। सबको साधन मिले, काम मिले, यह दूसरी कोशिश है। "किमान या अल्पतम मजदूरी" देकर विषमताको हटानेकी दूसरी सीढ़ी चढ़ी जाय, यह तीसरी कोशिश है। खादीमें ये तीनों प्रकार समाये हुअे हैं।

विषमताका रूप भी सोचने लायक है। कुदरतन मनुष्यकी आवश्यकता भी समान नहीं है। अिस विविधतामें अुसे आनंद है,

www.vinoba.in

पर जबरदस्तीकी विविधता अुसके दिलमें चुभती है। परिवारकी विषमता अुसे सुखद और आनंदमयी लगती है। लेकिन समाजकी, गांवकी विषमता अुसे खटकती है। कारण वह कुछ जबरदस्तीकी, कुछ लाचारीकी रहती है। अिसलिअे अैसा भी कहा जा सकता है कि विषमता हटाना यह मुख्य समस्या नहीं है, बल्कि अुसका विष — जबरदस्ती, लाचारी — हटाना ही महत्त्वकी बात है। मजदूरीमें भी यही बात लागू होती है। यह केंद्रित संगठनसे नहीं सध सकता। परिवार जैसी अेक छोटी अिकाअीमें वह सध गया है। अुससे विशेष बड़ी न हो अैसी अिकाअीमें ही यह सध सकता है। यानी गांवकी अिकाअीमें ही सध सकता है। ग्रामोदय खादी-संघको यही साधना है। यह साधते हुअे अुसके कामोंमें मजदूरी देनेके प्रकार और अुसके मान विविध हो सकते हैं, होनेवाले हैं और होंगे।

चरखा-संघके और ग्रामोदय खादी-संघके मजदूरीके मानमें बुनियादी फर्क रहेगा। (चरखा-संघने किमान मजदूरीकी दृष्टिसे कताअीके दर निर्धारित किये हैं।) गांवके गांवमें खादीसे संबंधित जो कुछ लेन-देन होगा, अुसमें चरखा-संघके ही निर्धारित दरोंका अमल हो अैसा आग्रह चरखा-संघ भी नहीं रखेगा। लेकिन किसी कारणसे खादीको गांवसे बाहर भेजना पड़े, तो अुसे चरखा-संघके दर लागू होंगे; क्योंकि वे सबसे अूंचे होनेसे गांवको अुतना संरक्षण मिलता रहेगा।

गांवके गांवमें व्यवहार करते वक्त ग्रामपरिवार-भावना बढ़े, यह देखना आवश्यक होगा; अुसके लिअे पैसेका नाप छोड़कर अनाजमें या अन्य किसी श्रमके रूपमें दर ठहराये जानेकी जरूरत भी पड़ेगी। मसलन्, अनाजका दर बाजारमें आठ आने सेर हो तो भी जिस सूतकी कताअी पैसेमें आठ आने होगी अुसके लिअे अनाज अेक सेरसे कमें भी देनेका तरीका वह अख्तियार कर सकता है। अैसा करना गांवका आर्थिक व्यवहार काबूमें रखनेके लिअे जरूरी हो सकता है। जैसे-जैसे गांवोंका अपने अर्थशास्त्रका ज्ञान बढ़ेगा, वैसे-वैसे वे अैसे तरीके काममें लाकर ग्राम-परिवारकी हालतको सुधार सकेंगे।

अूपर कहा गया है कि गांवके बाहर यदि खादी भेजना पड़े, तो वह चरखा-संघके दरोंसे ही बेची जाय। लेकिन तब अेक सवाल यह अुठता है कि गांवमें बनी सस्ती खादी बाहर भेजते वक्त ग्रामोदय खादी-संघको कुछ बचत होगी, अुसका क्या? अुसके लिअे योजनामें यह सोचा गया है कि अुसका विनियोग तीन तरहसे हो: (१) पूंजी बढ़ानेमें, (२) मजदूरी ज्यादा देनेमें, (३) गांववालोंको खादी सस्ती देनेमें। अगर पूंजीमें वह पूरी या आंशिक जमा करनी हो, तो वह ग्रामोदय खादी-संघकी पूंजीमें जमा की जा सकती है या कारीगरोंके शेअरके रूपमें।

खादी-कामकी बचतका विनियोग कैसे करना अिसका निर्णय ग्रामोदय खादी-संघ ही करेंगे। फिर भी यह अुचित होगा कि अिस तरहसे पूंजी विशेष न बढ़ायी जाय। वह कारीगरोंमें और ग्राहकोंमें ही खर्च की जाय। दूसरे कामके लिअे अिस मददसे पूंजी खड़ी करने तथा खर्च करनेके प्रलोभनमें न पड़ना ही ठीक होगा; खादी पर अधिक बोझ डालना ठीक नहीं होगा।

अंतमें अितना स्पष्ट करना जरूरी है कि खादी मुख्यतः स्वावलंबनकी वस्तु है। अुसे भूलकर यह चर्चा नहीं की गअी है। पर स्वावलंबनकी पूर्तिमें गांवोंमें खादी-प्रक्रियाका लेन-देन रहेगा ही। अुसके विनियोगके लिअे ये विचार रखे गये हैं। अैसे विनियोगमें बुनाअी और रंगाअीका बड़ा हिस्सा रहेगा। अिन प्रक्रियाओंके बारेमें हम आगे सोचेंगे।

कृष्णदास गांधी

('कताअी-मंडल-पत्रिका' — २५-७-'५३ से)

## तेल, घानी और विदेशी विनिमय

आजके बाजारकी गतिविधि और प्रवाह तथा आयात-निर्यातके जानकार मालूम होनेवाले अेक भाअीने बम्बअीसे अपने पत्रमें सरकारके खिलाफ अेक शिकायत लिख भेजी है। अुसमें बताअी हुअी बातें अगर सच हों, तो अैसा नहीं कहा जा सकता कि अुनकी शिकायतमें कोअी तथ्य नहीं है। वे लिखते हैं:

"पिछले दो महीनोंसे खाद्य तेलोंके भावमें हुअी बढ़ती यह सूचित करती है कि किसी चीजकी बहुतायत या तंगीसे फायदा अुठानेकी व्यापारियोंकी वृत्ति आज भी पहले जितनी ही जाग्रत है।

"मौसमकी शुरुआतमें मूंगफलीकी फसलका बहुत ज्यादा अन्दाज लगाकर सरकारने निर्यातकी ज्यादा छूट दे दी। लेकिन फसल तो अन्दाजसे बहुत कम अुतरी। यह मौसमके शुरूमें ही स्पष्ट दीखता था, फिर भी सरकारने कोअी कदम नहीं अुठाये। और जब बाजी हाथसे चली गअी और यहांके अूंचे भाव विदेशोंको न पुसाये, तब सरकारने अुसके निर्यात पर नियंत्रण लगाया और नये 'कोटा' नहीं दिये। लेकिन यह कदम बहुत देरसे अुठाया गया, अिसलिअे कोअी लाभ नहीं हुआ। लोगोंकी स्थानीय मांग पूरी करने जितना भी स्टाक न रहनेसे बाजार खूब अूंचे चढ़ गये। नतीजा यह है कि आज गरीब लोगोंको, जिन्हें घी तो देखनेको भी नहीं मिलता, अुचित भावसे तेल भी खानेको नहीं मिलता। और महंगा तेल भी शुद्ध ही होगा, अिसकी कोअी गारंटी नहीं दे सकता। जूनके पहले हफ्तेमें यहां मूंगफलीके तेलकी थोक कीमत रु० २४-८-० मन थी, जो अब रु० २९-४-० हो गअी है। और फुटकर ग्राहकको तो तेल रु० १-४-० सेर मिलता है। अब चूंकि नयी फसल दो माहमें ही निकल आयेगी, अिसलिअे बाहरसे मूंगफली बुलाना भी अव्यावहारिक होगा। अन्तमें सरकारको आम जनतासे अिसके लिअे माफी तो मांगनी ही होगी। सच पूछा जाय तो विदेशी विनिमयके लालचसे तिलहनका निर्यात करके किसानोंको अनाजके बदले तिलहन बोनेका प्रलोभन देना भी आजके अन्न-संकटके समय अनुचित ही कहा जायगा। मौज-शौककी चीजोंके आयात पर कड़ा नियंत्रण रखनेसे तिलहनके निर्यातसे मिलनेवाला विदेशी विनिमय बचाया जा सकता है।"

यह सच है कि सरकारी अर्थ-विभागकी नजर अिस बात पर जरूरतसे ज्यादा रहती है कि विदेशी विनिमय कितना मिलता है। अर्थमंत्री अपनी थैली पर ही नजर रखे यह ठीक है। हरअेक व्यापारी और व्यवसायी भी यही करता है। लेकिन अिसके पीछे अुसका अपना स्वार्थ होता है, जब कि लोकमंत्रीका अपना कोअी स्वार्थ नहीं होता — अुसे प्रजाके अर्थकी रक्षा करनी होती है। लेकिन चाहे जिस अुपायसे विदेशी विनिमय बढ़ानेमें ही प्रजाका हित है, यह समझ अधूरी है। कभी-कभी अैसी समझसे चलनेमें देशके अुद्योग-धंधों और रोजीको कुल मिलाकर नुकसान भी हो सकता है। आयात-निर्यात करनेवाले व्यापारी तो व्यापारकी ताकमें ही रहते ह; अिसलिअे किसी न किसी तरह समझाकर जब जैसा मौका मिले, तब वैसा व्यापार वे पैदा करना चाहते हैं। वैसे तिलहन बाहर जाना ही क्यों चाहिये? क्या हमारे देशमें तेल और खलीकी जरूरत नहीं है? ये चीजें थोड़ी ज्यादा होंगी, तो लोगोंको ज्यादा मात्रामें मिलेंगी। अुससे कोअी नुकसान नहीं होगा। परंतु बड़ा दुःख तो यह है कि पैसे और भाव-तावके आधार पर ही देशकी आर्थिक स्थिति परखनेकी कुटेववाले अर्थ-शास्त्री दूसरा कुछ कर ही नहीं सकते। देशके किसान और आम लोग अिस सत्यको समझ लें कि सच्चा धन पैसा नहीं, बल्कि जीवनो-

www.vinoba.in

पयोगी माल और साधन-सामग्री है। अिसलिअे वे यथासंभव अिस भाव-तावके फंदेसे बाहर निकलें, तो बड़ा लाभ हो।

तेलको घानीकी चीज रहने देनेके बदले मिलकी चीज बना देनेसे वह (तेल) खुराककी चीजके बजाय व्यापार और मिलके मुनाफेकी तथा पैसा कमा खानेकी चीज बन जाता है। अिसलिअे अैसी बातोंमें अगर आखिरी फैसला जनताको करना है, तो समझ लेना चाहिये कि तेल घानीके ग्रामोद्योग द्वारा पैदा होना चाहिये। अैसा होगा तो तिलहन व्यापार-व्यवसायके संघर्ष और होड़में पेले जानेके बजाय खानेके तेलके लिअे अुनके हाथमें ही रहेगा, और आवश्यकतानुसार घानीमें पेलवा लिया जा सकेगा। लेकिन अिसके लिअे गांधीजीके अर्थशास्त्रकी यह सर्वोदयी दृष्टि पसन्द करनी होगी।

२३-७-'५३ मगनभाअी देसाअी

(गुजरातीसे)

## युवकोंके लिअे आदर्श अुदाहरण

महादेवभाअीसे मेरा पहला संपर्क सन् १९१० में अेलफिन्स्टन कॉलेजमें हुआ, जहां मैं और वे दोनों ही अुस समय पढ़ रहे थे। वे मुझसे दो साल आगे कानूनका अध्ययन कर रहे थे, और मैं आर्ट्सका विद्यार्थी था। कॉलेज-भवनके बरामदोंमें आते-जाते मेरी निगाह अुनके अूंचे, चपल, स्फूर्तिमय और सुन्दर शरीरकी ओर सहज ही खिंच जाती थी। बुद्धि और चारित्र्यकी दीप्तिसे चमकता हुआ अुनका चेहरा दिल और दिमागके अुन सारे गुणोंका परिचायक था, जो बादमें बापूकी स्नेहकी छायामें अितने अुत्कृष्ट रूपमें विकसित हुअे। कॉलेजमें मुझे कभी यह खयाल नहीं आया कि अुनका अैसा आश्चर्यकारक विकास होगा और वे हमारे आधुनिक समयके सर्वोच्च व्यक्तिके जीवन और कार्यमें अैसा महत्त्वपूर्ण हिस्सा लेंगे। कोअी ८–१० सालके बाद जब मैं फिर अुनके संपर्कमें आया, तो अुनके जिन गुणोंसे मैं बहुत प्रभावित हुआ, वे थे कर्तव्यके प्रति अुनकी दृढ़ निष्ठा, अुनके चेहरे पर हमेशा खेलनेवाली मोहक मुस्कान, संपूर्ण आत्म-निग्रह, किसी भी कार्यकी तफसीलके विषयमें अुनकी सावधानी और हरअेकके प्रति अुनका प्रेमपूर्ण व्यवहार। अुनका जीवन गांधीजीके जीवनके साथ घनिष्ठ भावसे जुड़ गया था और अुनके सान्निध्यमें महादेवभाअीका विकास लगातार हर दिन होता गया। अुनका अथक अध्यवसाय तो हम सब लोगोंके लिअे अीर्ष्याका विषय था। यह देखकर सचमुच आश्चर्य होता था कि वे अेक दिनमें कितना काम कर डालते थे, और छोटी-बड़ी कितनी चीजों पर निगाह रखते थे। बापूका काम वे जिस भक्ति और प्रेमसे करते थे, अुसे देखकर तो मालूम होता था कि वे अुन्हें जन्मसे ही लेकर आये हैं — गोया वे अुन्हें अुनके पूर्वजन्मसे — अगर हम अुसमें मानते हों तो — प्राप्त हुअे हों। अंग्रेजी, हिन्दी और अपनी मातृभाषा गुजराती पर अुनका असाधारण अधिकार था। भाषाकी तो अुन्हें स्वाभाविक देन मालूम होती थी। अपनी अंग्रेजी रचनाओंमें अुन्होंने बहुत प्रभावशाली शैलीका विकास कर लिया था। महत्त्वपूर्ण और गैरमहत्त्वपूर्णका अुन्हें गहरा विवेक था। वे जानते थे कि लोगोंके सामने क्या चीज किस रूपमें जानी चाहिये। अुनके अिस गुणने अुन्हें बहुत सफल पत्रकार बनाया था। बापूके स्वास्थ्यके विषयमें अुनकी चिन्ता देखकर दर्शकका चित्त द्रवित हो जाता था। अिस सिलसिलेमें मुझे सेवाग्रामका अेक प्रसंग याद आता है। अुन दिनों मैं बीमार था और दिनका अेक हिस्सा महादेवभाअीके ही कमरेमें गुजारता था। अेक दिन मैंने अुन्हें बहुत ही चिन्तित और बेचैन देखा। अुस दिन अुनके चेहरे पर अुनकी परिचित मुस्कान नहीं थी। मैंने अुनसे पूछा कि क्या बात है, तो अुन्होंने बताया — "बापूका रक्तचाप बहुत बढ़ गया है — वे शरीरसे हदसे अधिक काम ले रहे हैं। मैंने आज सुबह अुनसे बार-बार कहा, पर वे मानते नहीं हैं और बराबर अुसी गतिसे काम करते जा रहे हैं। आप देखिये, आपके कहनेसे मानें तो मान जायं।" जहां महादेवभाअी विफल हो गये थे, वहां मुझसे क्या बनता। लेकिन वे अितने व्याकुल और बेचैन थे कि मैं कोशिश करनेके लिअे राजी हो गया। वह बापूका मौन-दिवस था। मेरी अपील पर अुन्होंने बहुत छोटा अुत्तर लिख दिया — "मैं सीमाके बाहर काम कर रहा हूं, यह बात नहीं है; और मेरे रक्तचापका कामकी अधिकतासे कोअी संबंध नहीं है।" मैं अुसे पढ़ रहा था कि अुन्होंने अुसे फिर वापिस ले लिया और अुसमें अेक वाक्य और जोड़ दिया: "अगर मेरे मन पर मेरा ठीक काबू हो, तो रक्तचाप नहीं बढ़े।" अिसके बाद मेरे, महादेवभाअीके या किसी औरके कहनेका कोअी अर्थ नहीं रह गया था। लेकिन मैं जब महादेवभाअीके पास पहुंचा और अुन्हें जो कुछ हुआ था सुनाया, तो अुससे अुनका अुद्वेग किसी तरह कम नहीं हुआ। बापूके साथ महादेवभाअीका संबंध पिता और पुत्रके संबंधसे भी कहीं गहरा था। महादेवभाअीने बापूको और बापूके कामको अपना सर्वस्व दे दिया था। अुनका जीवन अपने लिअे कभी था ही नहीं। अुनका सारा जीवन अेक महान् यज्ञ था और वे खुद अुसकी आहुति थे। अिसी तरह अुन्होंने अपना जीवन जिया, और अिसी तरह अुनकी मृत्यु हुअी। महादेवभाअीकी कार्य-निष्ठा, अध्यवसाय, अुनका विनम्र व्यवहार और प्रेमभाव हमारे देशके युवकोंके लिअे अेक आदर्श अुदाहरण पेश करते हैं।

(अंग्रेजीसे) जयरामदास दौलतराम

## टिप्पणियां

### अखिल भारतीय पशुवध-निषेध दिन

मैसूरकी ह्यूमेनिटेरियन-लीगके अवैतनिक मंत्रीने नीचेके शुभ समाचार भेजे हैं:

> "मध्यप्रदेश सरकारने यह आदेश निकाला है कि १५ अगस्तको राज्यके सारे कसाअीखाने बन्द रहने चाहिये।"

हस्बमामूल अिस दिन फौजी कवायद, कूच वगैरा कार्यक्रम होंगे। अगर सरकारें अूपरके ढंगसे भी स्वातंत्र्य-दिवस मनानेके रास्ते निकालें तो बड़ी अच्छी बात होगी। हम अैसा अखिल भारतीय दिवस भी मना सकते हैं, जब सारे देशके कसाअीखाने बन्द रहें।

८-८-'५३ (अंग्रेजीसे) म० प्र०

### हिन्दी = अुर्दू = हिन्दुस्तानी

मुझसे जब कोअी पूछता है कि क्या आप हिन्दीको चाहते हैं, या हिन्दुस्तानीको या अुर्दूको, तो मैं अुनसे पूछता हूं कि आप 'माता' को चाहते हैं या 'मां' को? मुझे हिन्दुस्तानी और अुर्दूमें फर्क नहीं मालूम होता। दाढ़ी बढ़ानेमें और अुसकी हजामत करनेमें जितना फर्क है, अुतना ही हिन्दी और अुर्दूमें है। बढ़ी हुअी दाढ़ी अुर्दू है, सफाचट दाढ़ी हिन्दी; क्योंकि हम देखते हैं कि दाढ़ी पन्द्रह मिनटमें बढ़ जाती है। अंग्रेजीमें मिल्टन और वर्ड्सवर्थकी भाषामें जितना फर्क है अुतना ही फर्क हिन्दी और अुर्दूमें है। दो-चार अुर्दू शब्दों या संस्कृत शब्दोंसे भाषा कभी नहीं बदलती।

विनोबा

विषय-सूची


| | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| सर्मपित जीवन | राजेन्द्रप्रसाद | १८५ |
| प्यारे महादेव | च० राजगोपालाचार्य | १८५ |
| पुण्य स्मरण | मोरारजी देसाअी | १८५ |
| गुनाह और बेकारी | सुरेश रामभाअी | १८६ |
| सौ फीसदी स्वदेशी | गांधीजी | १८६ |
| अगस्तका महासप्ताह | मगनभाअी देसाअी | १८८ |
| शहीद महादेवभाअी | सुशीला नय्यर | १८८ |
| महादेवभाअी | अमृतकुंवर | १८९ |
| स्वदेशी धर्म | मगनभाअी देसाअी | १९० |
| खादी और मजदूरीका मान | कृष्णदास गांधी | १९० |
| तेल, घानी और विदेशी विनिमय | मगनभाअी देसाअी | १९१ |
| युवकोंके लिअे आदर्श अुदाहरण | जयरामदास दौलतराम | १९२ |
| टिप्पणियां : | | |
| अ० भा० पशुवध-निषेध दिन | म० प्र० | १९२ |
| हिन्दी = अुर्दू = हिन्दुस्तानी | विनोबा | १९२ |


www.vinoba.in